ISSN : 2583-2948

लघु कथा

यह लड़की

डॉ. दीप्ति
विभागाध्यक्ष (हिंदी)
हिंदू कॉलेज अमृतसर, पंजाब
सम्पर्क: drdeeptihodhindi5@gmail.com

मीना उठ जा। 6:00 बज गए हैं। न जाने यह लड़की क्या खाकर सोती है, उठने का नाम नहीं लेती है। जाड़े की ठंडी भोर में 12 वर्षीय मीना जल्दी से उठकर अपना बिस्तर तय करके रखकर घर की सफाई करने लगती है।

दीदी 11 वर्षीय कृष को बड़े प्यार-दुलार से उठा रही है कि बेटा उठ जा। 8:30 बज गए हैं। स्कूल जाना है। वैन वाले भैया आते ही होंगे। मीना कृष का बादाम का दूध रसोई में रखा है। उसे ले आओ। मीना कृष को दूध पकड़ा कर कपड़े धोने चली गई। टी.वी. देखते-देखते कृष दूध नहीं पी रहा था तो दीदी उसे बड़े चाव से लाड़-मनुहार कर दूध पिलाती है।

मीना डोमिनोस' पिज़्ज़ा का पार्सल आया है। दरवाजे से ले आओ। मीना चुपचाप कृष को पिज़्ज़ा, बर्गर, फ्रेंच फ्राइज और कोल्डड्रिंक परोसकर रसोई में बर्तन धोने चली जाती है। मीना बाग में कृष को झूला दिलवाना और उसके साथ बैडमिंटन भी खेलना। झूलों को मीना ललचाती नजरों से देख रही है।

मीना अगर खाना बना दिया है तो डाइनिंग टेबल पर सभी का खाना लगा दे, मीना घी से चुपड़ी रोटियों का डिब्बा, दो सब्जियां, दही का रायता, पापड़, सलाद और हलवा रख आती है। जब सब खाना खा चुके तो उसने मालकिन से खाना मांगा। देखा तो उसकी थाली में दो दिन पुरानी सब्जी, सूखी दो रोटियां है। भूखी मीना थाली की ओर अवाक खड़ी देखती है कि यह मेरा भाग्य है या मेरे मां-बाप की गरीबी का फल।